

ॐ नमः श्रीगुरुभ्यो ॥ ॥ अग्नियदा ॥ कात्यायनानमस्यामी दधीषिदुवनध्वनी । स्कन्दस्यजननी । एष पार्वती लाल
नी ॥ १ ॥ अरुणकागिनीवीर्यधूलयलीसधामिनी । कयालरुसमध्वानं नृकलैकं विरुषिमा ॥ २ ॥ अगमार्हं जयाव
यी विगुहना नानात्मिका ॥ यायार्हं यायकर्मार्थं यायात्मा यायसकृद्वश ॥ ३ ॥ यादिमार्हं विकार्याल यादिगर्भं वयः
सकृद्वश ॥ नमस्कृन्नीदनीदय कालनागि ॥ धनूर्ध्ववश ॥ ४ ॥ जयविजययिर्गवध सावित्री जगद्वदस । मन्त्रकागर्भं सीरु
नमस्कृन्नीतनन्दिनी ॥ ५ ॥ निगुम्भुम्भुमधनी महिषासूत्रमदनी । स्वप्नरुम्भुविगल्लाक्षि नमस्कृन्नीदवादिनी ॥
६ ॥ दुर्द्धकगिनी नमस्कृन्नीदनी । धर्मनिनायकवदनी । वदनी । वदनी । वदनी । वदनी ॥ ७ ॥ गीगवायनगनि
नी । नमस्कृन्नीदवादिनी ॥ सूर्यवन्दयनी का । न । अग्निदातासमय ॥ ८ ॥ दुष्प्रमदप्रधानिनी । नृदयनिनी

मासुग। आरुनी वदनिदानी। धूलानी जयकीर्तिनी॥१॥ यादिकि० यातिगानी व, त्वगनि यत्र मायिगा। त्वया याय
मिदं सर्वं जेलाई सवत्रावर्त॥२॥ रुकानी वद सनिर्त्तं नमस्कृत्य कीर्तिनी। सद्धिसिद्धि हृदि तुष्टि, धीलक्ष्मी व
ननक्षत्री॥३॥ सत्यनी सत्यवर्गीये व मदिनी त्वं युक्ता किं गा। केला। गुमनूयुष्टय मलयगन्धमादन॥४॥ यास
नयुमुनी दत्री। सुयमाना सुनासने। आसाव सर्वरुगानी। गोत्रा त्वं वन्द्य रुमनि॥५॥ गिरिगुह्यया सर्वं जन्म
क्षीयम। गमन॥ वलदवतु मायया वकायधन मासुग॥६॥ वलिकवतु नोदव, यवतु वरुध्वज। यदय
रुदयैर्दुर्गं नमस्कृती कत्रयिथ॥७॥ सुय। मयद्वर्गवर्ष यन्नगि श्रमनासने॥ अय्यत्रा हि श्रमहि न, नम
स्कृत्य दहिनी॥८॥ कपालमात्राधनी त्वं, रुमीगीगन मासुग। नाटयिथ न मासु र्ही नमस्कृति कमाननी

॥ मालाधनि नमसु र्ही नमस्कृत्य नलायुधि। दक्षासहनमसु र्ही नमस्कृति कमाननी॥९॥ जनार्दन नमसु
र्ही नमस्कृत्य काकात्र वासिनि। गदागवनदीगी ववनमूयनदी सूय॥१०॥ अर्चना। गच्छिथ मू। मरुना गुगुल
मूय। यूसुगद विमर्षय यागाल गलवासिनि॥११॥ कादम्बनि नमसु र्ही नमस्कृतां वानिनी। रुक्मीमुखि
नमसु र्ही नमस्कृत्य कलावनी॥१२॥ गवर्धनि नमसु र्ही नमस्कृतां वानिनी। नमस्कृत्य मारुगी वानाही व
न मासुग॥१३॥ नमस्कृति यस्मै यम नमस्कृत्य मलावनी। वलवद्धी नमसु र्ही काटवाक्षी न मासु ग॥१४॥ ज
रुनी रुक्मी त्वं यत्र। गेय विद्यात्रिणि। मोरु स्य सर्वदृष्टानी विममस्कृत्य सैहिगा॥१५॥ नादसानी यिगा
योनी। जाकिनी नीगाथे वय आरुनक ० गगयाली। यमिगान् विमसैरु न॥१६॥ याय। गद विरुक्षाभा य

मायागामिसूचनी।यान्ननविषमदूर्ग।गंकटगकुवस्तिग॥२५॥नाजद्वानुसंयममविवादद्वानिजिठिग।य
 ह्वास्मनखकिद्वी।दूर्गदूर्गदूर्गद्वयी॥२६॥आयदगस्यनस्यनि।सूर्यनेवहिमंयथा।वधवावाजयधननि
 गमेलाहपूखले॥२७॥रुचिगगद्वमद्वी।स्वायस्ययत्रिकीरिनागाकगवनजदाद्वी।ह्वमा।धुगुरुवजग
 ॥२८॥निरुगोर्कगदागूलो।ह्वयामायाविमाहिगो।यलेरुगुहगोदेय।कदियहिमकीगिकी॥२९॥उयवओ
 गत्रीदाव।यानवोडमलोई।नो।आनीविषोमहाद्यावो।यमनेद्विसेहिग॥३०॥कालिकानामनागदाद्व
 गयगिदूर्कयशदमिगसुमहानाद।ह्वत्यसादासहध्वनी॥३१॥द्वीभकधुनमसुस्ययकधुनमासुग।
 कीरुमानमिदंस्वार्थ।गकुगोनायवद्वी॥३२॥यशय।यामनूकायमध्वकसुमनेध्वानगकुवह्वस्य

स्यनि।आयुश्वेवविमर्दग॥३३॥नाजद्वानगगानाथ३।संयमयेडकादिका।अयप्रलस्यगनित्यी।स्वायस्ययत्र
 कीरिगी॥३४॥यश्वस्त्विलस्यगकामान।द्विध्वनयनायग।ययध्वसर्वगीधनि।सकदीयवनावन॥३५॥गत्य
 ध्वलरुगनित्यी।स्वायस्ययत्रिकीरिमोन॥३६॥मिमाक।धुयुना।कायायनीरुहात्रिकसमाय॥३७॥
 द्विगिया॥३८॥नममधुधिकाय॥वक्रावीवक्रमाविगीवक्रगत्वविद्विनी।वडुर्कुर्कुवडुर्वेकु।वडुर्वेदयनायनी॥
 वडुर्कुर्विलयापि।वडुर्गयनायनी॥ह्वयकविमानसु।सोमयूधियिगामही॥युधकजायमालेववज
 दारुययानना।यीगयूधयनाद्वी।यीगीगीयगवाहिनी॥यीगायहानसीउध्व।यीगगीधनूलयिनी।उदूध्वन
 गनावसुधयागकयनिवाहिनी॥धूर्धया॥३९॥हिगानित्यावक्रगकिनमासुग॥४०॥माहध्वनीमहाद्वी।माह

माया निर्हृजनी ॥ महाद्वय रुमावृता महाद्वय कावनादिनी ॥ रुमवृत्तानि रूयदं कयालीगनि (गद्यत्री) ॥ शिलावनी विष्णु
लव अक्षय क मधुल ॥ हागलीकात्र सेवो ज्ञा दक्षि (वनवत्रयदा) ॥ सुष्टिस्त्रिनिविनाशानी सर्वथापि सत्रयत्री ॥ स्व
नयपुष्पत्रयी दवी ॥ श्वगाक्षी ॥ श्वगवोसिनी ॥ श्वगवत्रयत्री धनी मूकारुत्रयत्रयिनी ॥ वात्रावस्या महाद्वय गालद्वय
नूवासिनी ॥ आग्नयावस्त्रिनी ॥ यी ॥ १० ॥ मोदुश्वत्री नमाश्रुत ॥ २ ॥ वालरुवमहोदो कीमानी वक्रवाचनी ॥ वक्रवत्रय
त्री धनी ॥ सिद्धनामूल विग्रहाग ॥ अशुद्धज्ञागकिगृह सिद्धिदायधर्मगुरु कीमालीयत्रमंगकि मयूत्रवत्रवाहिनी ॥
वक्रपुष्पत्रयी दवी ॥ वक्रमीमावसयिय ॥ कालायुष्यमहाद्वय वटद्वयानिवासिनी ॥ याम्ययी ॥ १० ॥ स्त्रिनी त्रिणी का
मात्री वनमाश्रुत ॥ ३ ॥ वैष्णवी विष्णुमायी च देहदूर्गा कनासिनी ॥ रुजिगस्यामवशुजा गवृणयनि सीस्त्रि

॥ शिववक्रगदाहस्ता, यदुर्वीरुविहसिगा। नलदातामहावीर, नानावत्तविहसिगा ॥ रुनीपूर्यवगन्धर्व, सदाह
त्रिभुवनिनी। स्वर्गमहेश्वरयागाल, स्तिगिनुयनसंस्तिगा ॥ अष्टहसमहाकय, कदम्बवृक्षवासिनी, गिर्हगिनी
नेपथ्य, नात्रायनीनौनमास्तुत ॥ ५ ॥ वात्राहीधामनकाशी, नककगीमहायत्री। यदुर्वीरुविहसिगा, वात्राकंगजला
यनी ॥ कयालमालिकामाला, विविगययूषसाहिगा। मरुमहिषमायूरा, कालिगानिषमायूरा ॥ मीनीकृष्णकटिकाया
हागारुनगरुहिगा। गिनयदालिनीदरु, दूषदरुविनासिनी ॥ अयनिदुर्गसंस्ती, निम्बवृक्षसमास्तुता। नाग
यी ॥ स्तिगानिथी, कालयूयीनमास्तुत ॥ ६ ॥ गकध्वरीमहेश्वी, कंकमायूवविग्रहा। मूवध्वरीसदाध्वी, सर्वनी
कालहसिगा ॥ यदुर्वीरुविहसिगा, कृष्णध्वनिविभ्रानिनी। महावक्रध्वनीध्वी, स्तिगिनुयनसंस्तिगा ॥ नानायू

अधमादवी नानावत्तविहृदिगा। नानागन्धविलिफाङ्गा नानावस्तुविनाजिग॥ वनिशयमहाद्वय कदम्बवृक्षवासि
 नी। वायुयी। १०॥ स्निगानिरीणकध्वनीनमाश्रुग॥ ३॥ वामभुजवदिकायवु वलुवलासुधमिनी। वलुवलासवलासिध
 वलु वलुनाशिनी॥ दक्षाकत्रात्रकाक्षी कथिनुकणी कथादवी। कथाङ्गी कथनी मोदी डिक्ताललनरीमनी॥ महा
 धगासनावृता रुजाश्रुसासमारुनी। अग्नियर्मयगाहृसा रुमनूषदाङ्गमिनी॥ कर्णिकयालरुसा नि वनद
 रुयरुमिगा। ननयर्मदगादवी द्विधियर्मकटिस्निगा॥ मूलमालाध्वनी मोदी अकारुवनरुद्विगा। रुगलीका
 वसवीङ्गा अलिहृन्नुमदाधिय॥ सरुमसूर्यसिकार्ग वामभुजययमिधमि। दालामालाकलादहा गठिकाटिस
 मयरा॥ रुगवगालदाकिन्ना यनिवानश्वराद्वगी। जकाप्रकमहाद्वय अश्वरुद्वदवासिनी॥ पिथिडरु

सीम्हाय वामभुजयनमाश्रुग॥ १॥ महालक्ष्मीमहादवी सीरुकरुमनसूचनी विदूषयादूकानूरा सिंहासना
 नासुधी॥ वयुरुजाविगालाक्षी स्वमरुटकधमिनी। नोयूवहनकथूना वल्लकललधमिनी॥ वल्लवैखयीग
 सर्वोङ्गी वृणामनी विरुमनि॥ विविगयूषावर्तव वसुर्गधनूलयिनी॥ वैलासयाधिनीदवी सर्वरुमयगाव
 री॥ सिद्धिर्गधर्वममिगा विद्याधमिसूवाधिगा॥ दवीकाटमहाद्वय सीरुगाहृकलाकर्म। १०॥ ननयिनि सीम्हान
 महालक्ष्मीनमाश्रुग॥ २॥ अश्वरुद्वयस्निगादवी अश्वरुद्वनिवासिनी। अश्वरुद्ववसीयर्क अश्वमारुनमाश्रुग
 ॥ जननी सर्वरुगानी सर्वमत्तयकाविनी॥ सर्वदाश्वरादवी र्गमत्रयागकदनी॥ त्वमवसर्वसाश्वत् त्वम
 वयागवृथिनी। त्वमवगृष्टिर्गहार्ग त्वमवस्तिनिवृथिनी॥ त्वमवसर्ववृथिनी त्वमवविश्ववृथिनी। यी। १०॥

ममहादयं, यवदयं ममहासनी ॥ रुद्रवैराघवं नोदं, धानीगम्भीमनुचिनी ॥ नीलीजन निरुदरं, महाकायमहास्रव
॥ नाना रुद्रममाकीर्णं, नानासुधनागुरु ॥ विलायनमहागङ्गा, अग्निसूर्यसमचरं ॥ ब्रुवोमममसुगम्भ, द्रवा
निसमगङ्गा ॥ विष्णुलम्भुखदामं, दमनं नकुनीधुङ्गम् ॥ यानिजानमकम्बानि, स्वप्नयमधनागुरु ॥ योगाङ्गुगधः
नैदयं वदगुविगदाधनं ॥ कपालीकलिकैयर्क, गङ्गायमोवगुगिनी ॥ दक्षकनालवदना, द्यापुत्रमैकटिहगा ॥
सालीकावनसर्वोष्ण, ननास्त्रियुष्मसारिगा ॥ गीर्धमालाधनैदयं, कपालीमालिकारुमं ॥ ब्रुजमनिमहागङ्गा, कपालीवः
न्दुरुमर्ग ॥ महायगासनानुत्थं, नृत्यगानमदाधिय ॥ सर्वललनखगङ्गा, जगाविद्वत्समिन्निहं ॥ यदुधी ॥ ० स्तिगानिह्यं
अष्टदशानिवासिनी ॥ अष्टमूर्तिस्तिगान्दवी, अष्टाष्टकयागिनीधिय ॥ रुद्रधी ॥ ० स्तिगानिह्यं, रुद्रकालीसमा

गा ॥ रुद्रकायकलर्नं, वीनरुद्रनमासुग ॥ अगिगाङ्गनूत्रोष्ट्रवय ॥ ० कारु रुद्रवी ॥ डमरु रुद्रवोष्ट्रव, कपाली
रीमलसुधा ॥ सीहनाष्ट्रव अष्टाव रुद्रवाष्ट्रकनमासुग ॥ स्वस्वानखाधिकानाध, स्वस्वनूयास्त्रवीर्यका ॥ स्वस्वकार्य
मूवर्क न दियानकदयरुमिसा ॥ दशदिक्कदययाला ८ दगाष्ट्रववगुर्दग ॥ १ र्थवासदगपालीव दगपालीनमासु
ग ॥ नाथनार्थमहानार्थ, आदिनार्थमहात्मन ॥ गीनाथसिद्धिनाथश्च, मीननार्थनमासुग ॥ दगनाथश्च ३ पी ० ३ ३ दी
यनार्थमहात्मनाथगनाथश्च ३ रुगश्च, वदकनाथनमासुग ॥ गिनाथनवनार्थश्च, साङ्गनाथमूरुमं ॥ सुकाविग
दियश्च ३ स वीनासीनिनमासुग ॥ सर्वमानाथसिद्धानी, सुकर्नकलवृद्धय ॥ यागसद्यस्त्रुथवीना, गत्सर्ववनमासु
ग ॥ नककालीदिकालम्बा, गिकालय ४ य ॥ थलन ४ ॥ सगमावर्कयद्यसु, यात्रानिर्गुदमूरुमं ॥ नासयत्साकेविकानि

नामय विष्टि दवगा। नामय स्तुत रुवागमनि। नामय दूर खदूरु गिनी। नामय रुय दानिदं। नामय विष्टि मरुमी। ना
 मय द्रुवि वीनामि। नामय दाऊ काधुर्क। नामय त्म विष्टि धारं। नामय द्रुवि वात्रे रुग। नामय लोका ध्यामि। नामय
 सर्वयाग के। आयु आवाग्य मे ध्येय धन धन्येय वदने। धर्मार्थ काम मादानी। उम सोरु मरुमी। सद्धि सिद्धि विष्टि
 लक्ष्मी विद्या क्लान्त मूर्ति गिरी। वृद्धि यक्ष मूर्ति र्गय वृद्धि गय दिन दिन। सकान मन्त्र न कथ्यु ल्याग नामय त्सदा सच्च
 वागय सस्य कि दीर्घ मायु लक्ष्मी। **॥ गिनी ० नृन्य दद्याम गयीण वना न स्रुव समाय ॥ २ ॥**
रुगीया ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥
॥ ॥ गज मुख वाम काट श्व ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥ ॐ नमः प्रभु काय ॥

वी कनकी गी कमला सनी। वद्या गदी सद्धि द्रुग द्रुग गमिनी। **॥ ३ ॥** नाग कलु लक्ष्मी कया ले वल्लु गायत्री। नमः
 यानि नूयानि विनय वृष वाहनी। **॥ ४ ॥** यद्रवाग गता वीय सद्य सूर्य समय रु। गकि रुम मली काली कामात्री मय
 वासना। **॥ ५ ॥** विरु काय समाजी। निः। गय रुय नासनी। सीख यक गजयानि रुय कि गज गमनी। **॥ ६ ॥** नक क गय ना
 गाय कुरु रुम गिलायनी। वद्या वदन वावाहि नमामि महि खासनी। **॥ ७ ॥** जा निनूयी स्रनूयीय सोम्य नूयी निमिरुय।
 नमः स्रनूयीयानि वद रुम गजासनी। **॥ ८ ॥** वन दारु यधनी वदं गीखया लिखिलायनी। अग्नि यरु मरुदा लाः
 स्रका जी कमला सनी। **॥ ९ ॥** यय रु गधनी दवी निर्मल क्लान्त नूयिनी। ॐ नमः स्रमहा लक्ष्मी निर्विघ्न गुरु कानवी। **॥**
॥ १० ॥ वदीयामूठि कादवी ययिका यधु न्नीधनी। सर्व सिद्धि करी दवी सर्व विष्टि विनासनी। **॥ ११ ॥** यागर्ग कृणु गकि

खम, धूलमदामधननी। दहनीमालनीवडी, दानवावर्यनासनी ॥ १२ ॥ वनवीवायहं कारी, जोडीवूनवयहास
 नी। वूनववनककणंगी, वकारुवनरुखनी ॥ १३ ॥ द्वादशदिख्यर्गकाग, मलकीमलनासनी। दूर्तकावाडयवूपी, रुन
 लीलायकात्रिणी ॥ १४ ॥ गढामुखमूखाकाल, मधुमालासमाकल। जयजगत्माएकादवी, नमस्कृतिवूननश्वनी ॥ १५ ॥
 ननवर्मधनीदवी, द्याववर्मनिवासिनी। कयालाकारुवने, धूलधानिविनासनी ॥ १६ ॥ उमर्ववधकेयय, यधमनवव
 रुसनी। सादम्वनीमूर्हकारी, चिनयासादहासनी ॥ १७ ॥ नानागद्यसमाकीर्ण, रुक्तावमहावला। जेलायगसनीजो
 डी, यववुधगवाहनी ॥ १८ ॥ कल्याणिममहाकाली, कालारुक्मरुमिणी। यतिमुखिवववुनी, सैयममजयमंगला ॥
 १९ ॥ गालीधनडाठियान, दवीकाठनिवासनी। नानावूयधनीदवी, नमस्तेलायकालनी ॥ २० ॥ मूखाकालगद्य

खा, ललाटसिंदूरधननि। जकिनीरुगधगाली, पिभवेयानवहनी ॥ २१ ॥ दददानवगधर्वयदकिंनवयूजनी ॥
 गन्धवन्दनलिकाक्ष, पूयमालाविरुषनी ॥ २२ ॥ वदकनाथमहाकाय, दगयालसमायूना। श्रीमनगकिंसीयकीयाग
 धनीसर्मदिनी ॥ २३ ॥ रुक्मधर्म्यावउदस्या, द्याहमीवेकमवुला। कयालसीस्त्रिगादवी, ननर्ककालेसंकल ॥ २४ ॥ वक
 याववसामधर्म, मत्समीगावलिधिय। महारेववसीयर्क, नमामिजयरेववी ॥ २५ ॥ दगयी। १०महायी। १० गुप्तीसि
 यधवासिनी। कामाखाकामवूयी, मारुमाया। निनेजनी ॥ २६ ॥ दू४खसाकजनामागी, रुयपाठकनासनी। खमसिद्धिक
 वीदवी, लम्बीगीगुरुदायिनी ॥ २७ ॥ अनूदीनीरुकिराव, यय०किमुनिनवा। कामसिद्धिरुलीयाय, गुरुआनन्दः
 रुद्धिनी ॥ २८ ॥ निधीमारुकाविजयसुवसमाय ॥ ३१ ॥ ॥ वाथमकया ॥ ॥ नमामुगमाहामाय, अजिगनजनु

वनगच्छन्मयी ॥३०॥ नमस्त्यूनवावरु मायासुवमूदीनलग । छुहेव यात्रयाभागतं लारुं यूजायसपिय ॥३१॥
 भूवस्तु कर्मयकस्ययार्थयत्रगस्यव । समाधनययकस्य गीयाहस्यवर्तन ॥३२॥ निमायासुवात्रानामनन्दमन्त्र
 महामायासुगुसमाय ॥३३॥ ॥यश्चमी॥ डंनमावात्राहिकाये ॥ नमस्तुगमहामाय वात्राहिनामधनिनी ।
 कोलास्यावमहागोदी वदयुधवायनी ॥३४॥ सुरुयसूर्यगीकाग गजयूजसमन्विनी । वृद्धयुयमहावात्रा धानयूय
 रुयीकनी ॥३५॥ वधूकयूयगीकाग गजिमीकृधुमायमा । गीद्रासिद्धयसीकाग जवाकृधुमसीनिरा ॥३६॥ जीवनस्तुः
 मदाभर्ता युगयीनयथाधवा । सर्वलकालरुखाज्ञा मधुमालाविलम्बिनी ॥३७॥ शिनयनकधोनीकी डंष्ट्राकत्रालहाः
 गुवा । ययुर्कुजाधवाधवी अथवाहृकुजाधवी ॥३८॥ दक्षिणवहलीष्ट्वा वामावमूललीकत्र । कायीवत्रधवाधवी

नानार्जकालमधिगा ॥३९॥ त्रकाकाजामनाधवी धनस्थायिनीसीहि गा । सर्वलकालमर्जकी सर्ववयवसाहिगा ॥४०॥ मय
 मीमयियाधवी मयिमानन्दनन्दिगा । मूडिगासर्वलोकमुने लाक्षसवत्रावनी ॥४१॥ यिकानस्तुमहावक्र सीहिगाविष्ट
 यागिनी । ययकायमहावक्र सीहिगाययवनी ॥४२॥ अश्वनीनृधिनीवेव जम्बनीमाहनीगथा । सुकनीवसमायका
 यूजनीयासदावध ॥४३॥ वाक्त्रधकायवक्रव गृहमाधुयूजिगा । छुगभनकायमधुगु गकिगीवययूजयग ॥४४॥ रु
 दनीत्वकवर्माणी सर्वविद्ययकारिणी । अग्निकायवत्राकिन्ना गजवृधिवयीयनी ॥४५॥ यशिमकायमागृह्य लाकि
 नीमीसरुदनी । काकिनीवायुकायगु अस्ति धयुधरुदनी ॥४६॥ यूर्ध्वकायगुसाकिन्ना मयधयुधरुदनी । वाक्त्रस
 कायमागृह्य लाकिनीमर्जुरुदनी ॥४७॥ याकिनीकृगुमालिन्ना अष्टप्रभुवमधुगमा । युक्कधयुधरुदकि कायसीहान

12

79

[illegible]

[illegible]

यमु, प्राथयर्वा समाहिता। सावित्रेनेव कावन, लरुगवाश्चिर्गं रुली॥२२॥ अथ जन्मदिने धार्य, यथनादवनः
 स्थिति। यथर्गलिखिर्गनिष्ठयूयनादवसन्निधौ॥२३॥ नगयामकाद्योर्गस्थ, कदाचिगद्यजिजायग। नवामे
 वजलमृत्पूरुवस्यवनायथ॥२४॥ जयंयरावासादवी, जयदंभर्यगडगग॥२५॥ निमलमहामायाकार्य
 समाय॥२६॥ ॥ सयमी॥ उं नमावीनवामूयै॥ नमामुवीनवामूयै, नेमामुयत्रमश्वरी। जननीस
 र्वरुगानी, सर्वसंयदाकारिणी॥ वधुमधुस्माकार्थ, वयदागीमलनासिनी। नानाभूयधवादवी, मलाङ्गीसा
 म्यभूयिनी॥ धीनस्त्रीविगलादी, सर्वारुवगहृदिगा। मूकाकनकमानिष, कुलामूकूटध्वनिनी॥ स्तनयू
 गमदियकयूव, मूकसगुमसाहिता। नानावस्त्रानिवर्द्धक, भवलाकटिमधुल॥ रुक्मयादाश्वसर्वजिनाः

नायकवमभुगारुवती वृषसंकासा प्रकांक्षी मविक्रमा ॥ निजलीलुलिहकात्रि, सर्वगप्रदयंकरी ॥ नाः
 नासुखवती वती, नानासाधुसुखवती ॥ रुजाष्टदगकयूने, नानाजुष्टसुसारुनी ॥ प्रप्रभुयागगदावजा, रुद्धि
 यालाध्वगामना ॥ गकिनात्रावगन्दीय, विगूलागूलधविनी ॥ खजूरुचकधवी गीवा, कदावी कर्हिहविनी ॥ ७
 र्द्धकगी मूखीरुमा, रुवकाकात्रनादिनी ॥ सूर्यप्रसिमियाकीर्ण, सर्वदाभयसमिनी ॥ वरुणी ॥ १० वरुचक्रमः ॥ १४
 गानउत्तमववा, खीदवी सर्वरुगानी, मनकाकामवृषिनी ॥ वाक्काक्षसुखवृषेण, सर्वज्ञाजीववृषिनी ॥ यद्या
 सनसमावृण, यद्यनीयकमायिका ॥ किमिजलाम्बवयागाल, ययरुगेलेमवय ॥ वृणप्रयिगलाष्टिवदग
 वायानादिवृषिनी ॥ नारिकेलदुदिसुन, वक्रवीधववस्त्रिगा ॥ दुर्द्धसुनमहाज्ञान, ममृगामृगवृषि

१४

नी ॥ कूलमाधस्त्रिगादवी, ज्ञानमधयवृषिनी ॥ सुकिमूकियदागानि, सर्वज्ञावृषिनायिका ॥ वक्रद्विष्टुवोद
 न, वृणप्रयिगलाष्टिवदग ॥ नागद्वयदगमध्व, सर्वदवमनाहना ॥ यत्वावालाकयावानी, सर्वगत्वाध्वमागव ॥
 पश्ययामूनय, धेवदानवासूत्रयुजिगा ॥ ललाकात्रामहाद्यावा, जूद्धहासामहाप्रवा ॥ वामरुसुमहागर्व
 खधामिष्टमवृषात्रिनी ॥ जूद्धाहृहासगतिर्यजुद्यावाद्यावृषिनी ॥ भगवन्कीदिततिर्य, रुववीरुववास
 रु ॥ गृद्धकंकगिवाद्यावा, यिगवावगवाद्यमा ॥ गकिनीवोदवताली, यागिनीगवमदिना ॥ कयालमालिका
 दवी, कयालावलधविनी ॥ प्रकाम्बवयियानिर्य, जगत्सीहावकात्रिनी ॥ जूनकानामसनाम, मनकानामः
 नायकानानावृषानिवृषानि, वरुवृषानि नमामुत ॥ रुगवतीवलि कादूर्ज, रुवानीया मवृषिनी ॥ कालि

काकालवधाय कात्यायनी नमः सुग। वधवती विनयादी गायत्री गन्धर्वनी ॥ सावित्री सारुनी यक्षी रुच्यदी
 यवसुन्धरा। जयाय विजयाय वीर्युदिगाधाय वाजिगा। नन्दारुद्रा गायत्री यक्षी चूडमा देवी नमः सुग। गेव
 वीर्यामुरी गंगा। गिधानी गिधनूयिनी ॥ वटययलिकायादि गन्धर्वी यिधुवनश्वरी। यक्षाध्वनी विधायी शृ
 ष्ठीर्गलायका निनी ॥ जम्बुनी रुम्बुनी वेव सुमुखी रुच्ययात्रगा। सारुनी यक्षिकायक्षी नावसिंहिनायनूयिनी १७
 ॥ अनका विज्ञान सैयना कालिनी कलनायिका। मरुद्वीरुद्रकालीय वधनी यमप्रसवनी ॥ मागझी कालिका
 श्रेष्ठ महाकालकालरुदिनी। कामेश्वरी कर्णरुमात्री यिधुवीयमनारुवी ॥ लक्ष्मीर्त्तनामनानन्दी यिधुवाय
 यरुनवी। सूच्यगारुवर्गधवा रावाराव विवर्जिगा ॥ अनकमनु सैरुनि मन्दायथा कनूयिनी। वधुर्ज

र्दगमाचूरा वधुर्मखारु मन्त्रयिनी ॥ यिगामहि वधमागाध्वनी यनमा सुग। नमामि गिधसाय वीरिनि
 शागूलधनिनी ॥ येलोक्ष सारुनीयदी सारुध्वनी नमः सुग। गकिरुसामरुकाया मयूना मनसैरुगा ॥ वान
 रावयवकीर्गा कामात्री यनमा सुग। वधुर्जुजागनूठमाचूरा गीरवयकागलाध्वनी ॥ गेववर्धुमरुमाय वेरु
 वीयनमा सुग। यधुर्जुसामरुकाया मरुकायाध्वनी यनमा सुग ॥ यिनगोविधयादि वावाही यनमा सुग। कृजः
 लासनमाचूरा सरुयादिवधधनिनी ॥ अनका यिधुर्हकारा वृन्दानी यनमा सुग। यगा सनी मरुवीदी म
 उमाला सुसारुनी ॥ दुर्धकणीवर्क कालि वा मरुध्वनी यनमा सुग। यिधुर्हयन्दु सैरुन यिधुलावयधनिनी ॥
 वधवारुनी मरुद्वी मरुलक्ष्मी नमः सुग। वाक्सी सारुध्वनीयदी कामात्री वेरुवी गथा ॥ वावाही वृन्द वा

मूला महालक्ष्मी वरगता अनकदवगावृषी, स्वीदवी कामवृषिणी ॥ रुनवी अष्टसीयूकी रुनवीयनमाशुगाज
 यधुमश्रुसिंहश्रु नेमर्यावावृषीनय ॥ वायुयावागवरागीनीमनयनमाशुग ॥ अष्टदुष्टस्त्रयादवी अननि
 कजलकुवि ॥ त्विगाकिगाकिगीहारी, गकिवृषीनमाशुग ॥ नमकिरुकिसीयूकी, समरीयागिनीकली ॥ रुपीकर्वु
 यागिनी, रुवकुदकथाप्रकाशागमगत्याथयमु, नकविरुसमाहिग ॥ रुकिमूकिचर्यद्विरी, लरुननायसी
 गयगमगमनवायवा सवा, स्वस्वनवावनाकन ॥ सीप्रमवोवसीस्वन, अग्निदाहमहाहरी ॥ य००० मीय०
 नित्यं, सजया रुवगिमानव ॥ यथिकिर्गगहृतीद्विरी, लयगमीमहागुरु ॥ ल्यकनयन सर्वसत्तागुखीरु
 वी ॥ मागादिताश्रयुर्वीम रुविषीगिनिवयय ॥ निघावीनयामूणीकायसमाय०॥ ७ ॥

7/3

अष्टमी ॥ डैनम०यासिद्धिलक्ष्मीदयाये ॥ नमस्तुयवदवगा, सिद्धिलक्ष्मीमहाजसा ॥ यर्हीगिनामहादवी, नाजः
 लक्ष्मीनमाशुग ॥ यागिनीसिद्धिवृषाव, कवृषमयवृषिणी ॥ सानकानकवृषाव, माहकाष्टकमध्यग ॥ जगत्स
 रग्वीदवी जगत्सीरुनगद्वगगा ॥ जगत्सिद्धिकवीदवी जगदानन्दकात्रिणी ॥ येलाष्टजननीदवी वद्विचक
 स्यमध्यग ॥ अक्षाभवाष्टयर्गवयुर्द्वानसम यरु ॥ सिद्धिलक्ष्मीमहगानि वक्रयैवकवृषिणी ॥ हिमकू ॥ ७
 दसीकासा, गुहृहृटिकर्षनिरु ॥ सर्वस्वगानिरादवी, क्षालमोनसूगजसा ॥ जगत्सूगद्वर्गयूका, नीलेकृष्टिग
 मूर्द्धजा ॥ विनयैयगिनास्वगा, दगदाष्टगुधनिनी ॥ खदाज्ञाससिनाष्ट, वलाष्टजश्रुद्वि ॥ कायैगूली
 ययागैव अरुयामूगुवामक ॥ सर्वलीकालसीरुका, रुमवलादिलेकना ॥ गुहृवयुववीधना, मदिवानन्द

वगसा। नृदस्त्रधसमानुडा नृदस्त्रुटिकर्षनिरु। उकास्याविलायनसा खन्दनूयग सधना। यउरुसुमरुसा
 नि, दयरुसुयगाअलि। यगासनायत्रिष्ठनु, नकवधुमहादाला। काटिधु(धु)नूरायवी, दालसानसुर्ग
 सा। नाना नृयधवायवी, नानासधुसुसाहिगा। वदुवकावदुनुजा, वदुयायमहावला॥ विश्वनूयामरुणानिल
 श्वित्रूयावगात्रिणी। विकामनिमिरादवी, विकिगार्थरुलयदा॥ नमः॥ स्वाहाश्ववाधदूकाववधगासुर्का।
 नममन्नामहादवी, मन्त्रनूयावगात्रिणी॥ आधनसुस्त्रिगायवी, रुडंगकूटिसाहनि। सय्यककुलनीगकिन्नग
 म्यागम्यावात्रिणी॥ गने॥ गने॥ यथावनवक्राउद्वात्ररुदिनी। अनिमादिमहासिद्धि, सिद्धिसिद्धियेदायनी॥ य
 वात्मापिउसैयूका, नाडलक्ष्मीयदायन। लक्ष्मिदृष्टियगदवी, दीयर्कयत्रमध्वनी॥ स्कूलनूयामरुणानि

नवस्यादिगगद्य। सकादसंभनवम, सकर्षयासयिद्धन॥ उकादवनमहादवी, धूधनूयायगनमः॥ नम
 मन्नामहादवी, मन्त्रमार्गमरुध्वनी॥ सर्वयायविनिर्मक, श्वयनावाकवध्वनी। लक्ष्मियूकारुवकिमा, नदाः
 मरुगजन्दवग॥ सकसागत्रयर्क, गीर्थस्नानसकईवग। सकस्त्रयादहहस्वी, यायधेयिमित्रागिवग॥
 रुत्वाजगदिगकृत्वा, वक्रविहिः॥ ययूजयग। माहृहापिठहोदवी, वक्रहाडूनहासुथा॥ नमधिसाधिकयोष
 सकगमृत्वायवायवग। यिसै, श्वयया, थसार्ग, उकाविरुसमाहिग॥ आनयविधमध्याव, श्विहयायाहिर्
 कट। विधमगरुनवक्रा, रुगायस्मानकहवग॥ यनुमन्नादिधु(धु)ख, यनकृत्वाविनागयग। कलिकनापि
 दंष्ट्रस्य, विधनासनसैरुवग॥ रुगायस्मानयकादि, यगादिनीगनेहगा॥ दलवाउर्थसादवी, नासयस्मन

नादधि॥ अविनिगानिवाधनि सदागयवनिवरु। अलक्ष्मीसमनीरुया दूषयदाविदमर्दिनी॥ लक्ष्मीधनीः
 निविद्यागा वदुरुगयनायदा। महालक्ष्मीमहाकाका सर्वसाहायदायिनी॥ मदिवानन्दवगन्या, महापूछि ग
 लायनी। अनन्दसमरुगानि, विश्ववृषावगात्रिनी॥ वाक्कीनोदीश्वकोमात्री, वेङ्कवोदागघात्रकी। मारुडीयश्चिक
 वेवयदिकाश्यागिनी॥ अक्षयवीमहासिद्धि, सिद्धियागिनीमधुगायूजयद्विविधकात्रा, रीधमालादियुष्मके १८
 धूपयययुत्रकयूत्र, कसूत्रीयसमायूरी॥ अत्रादिगाडागसर्व, जेलाक्षमपियूजिगा। गजान्धमहिखाकगगभव
 शिवेगिरुद्धय॥ जमाययगिनात्राज, जयसर्वसदायुधेशवदुनायकिमूकन अविनिगानिसिद्धयग॥ समन
 उर्थसादवी, दूषयदाविदनासिनी। नमस्तुमहादवी, नमस्तुविश्ववृषिनी॥ नमस्तुजगतीमाते॥ सिद्धिलक्ष्मी

नमस्तु॥ रुगिनासिद्धिलक्ष्मीययगिनाकायसमाज॥ ६॥ ॥ नवमी॥ उं नमश्चिकोयी॥ नमस्तुगमहादूर्ग
 यक्षिकयलुविक्रम। विश्वेश्वरीजगद्धायी, सिर्गिहानकात्रिनी॥ सर्वसिद्धिकरीदवी, जयवृषावगात्रिनी। इर्क
 यात्रिजिगरुद्ध, महावेत्रिविनासनी॥ त्वीतीत्वमश्वरी, गोत्री, त्वंदवीजननीयना। यरुगिनिमुलदवी, मूलिगुय
 स्ववृषिनी॥ उं कानयलयादवी, क्रीकानयत्रमानन। क्रीकानयचक्रकानय, उकानविन्दुसीयग॥ दूगर्गदूर्गकीका
 नवेव, द्विविर्जनामसादका। दुयवलीयदद्यागा, स्वाहानयसूत्रस्वनी॥ रुमवर्धुविनयाश्च, रुजाहादगाध
 विनी। गिनश्चिवाहनकार्क, गूलेद्विदिविदात्रिनी॥ महावेत्रिविनासाय, महावाक्श्रकात्रिनी। वाश्चयदद्वि
 नयस्य, वाययलुगिनश्चिग॥ नमस्तुनिनिखायी, यक्रमचवययिय। क्रीकानयनयरुद्धन, रुट्मन्नासायवा

शुक्र ॥ अर्चनीवानरुमशरुगुयुर्वन्नवधनी। दार्णिगददवाख्याना, दूर्णस्वनीसुमूर्धना ॥ द्वांकारगर्जनीनायः ॥
रुयस्यापिरुयंकर्न। येलाययुजनीदवी, यूपधूयानिगर्थनी ॥ अलिरुत्तादिरुयुकी ४ युजनीयायहावके ४। ग
नक्ताममहायुजा, महासुम्याश्विवासिनी ॥ नवम्याहागयुजा ८ दगम्यायुयवात्रयग। सर्वविविनासाय, ऊय
नूयावगात्रिणी ॥ त्रिर्ध्वय ४ यथान्त्रिथी, नकविरुसमरुगिग ४। सगमावर्कयत्साधि, मयनसर्वथागके ॥ महा
संयममजयनी, विषददलनासिनी ॥ सुदूर्णवदनोदवी, महालक्ष्म्यवगात्रिणी ॥ दूर्ध्निनवामहावाग, महायाः
टवगस्वन। महावनसमगनव, महादावात्रिकयिवा ॥ नयनाऊकूलदूर्ण, विवादसजयीरुवग। समन्तगा
त्रिनीदवी, मयगसर्वसक्त ॥ यमुषकगलदूर्ण, डयवभादिकादिरु ४। महादूर्णस्वनीमाध, डेयवडी न

[illegible]

धरादिनिवाक्यः सद्यः काधनवासिनी ॥ मूलाधनस्ति नादवी, शार्ङ्गविश्वमनकरी, रुसीमारुधनी वली, वेष्म
वीमहिषासनी, मारुन्दीवद्विकालक्षी, गासूमाधयवस्तिता ॥ ज्यौकालमारुनीदवी, कौण्डीकोमात्रिकेश्वरी, त्वमे
श्वरीयत्रागकिः ४ स्वारास्वधस्वदूयिनी, डंकोननाददूयिनी, मृत्तलगतदूयिनी ॥ पुण्डरीकगलयाम्भोध, यत्र
हंसस्वदूयिनी, हानागिगायत्रानन्दासस्वत्रजगमात्मिका ॥ धृष्टिद्यायधमजश्ववायूनाकागमवत्रा, यत्र
गत्वात्मिकादवी, जगगस्थित्वदूयिनी ॥ निवगत्वात्मिकादवी, जगगस्थित्वदूयिनी, निवविद्यात्मगतत्वाः
हृन्नीयययदूयिनी ॥ निवानन्दकरीदवी, मायूनासनगमिनी, त्रकवशुविविद्याज्ञा, सिद्धनाबूनासाहि
गा, वधुनायकिदवनि, वानकीमात्रिदूयिनी ॥ वलुण्डवत्रगादवी, अनिमादिगुणान्विता, धृष्टमध

छिगानित्याङ्गगग४द्यावधमिनी॥ यत्रायत्रंजगद्यायी, सुद्धिस्ति नित्यं क्रमात्। ज्ञानविज्ञानव्यासा, सविद्य
 विस्ववृषिणी॥ सुश्रुतलगिस्वश्रवणत्यायस्ववृषिणी॥ ज्ञानामृगकवीदवी, उकिमुकिप्रदायिणी॥ सर्व
 कर्मेश्वरीदवी, यक्षयाक्षारुलयद। वेंवेंवें, उश्वरीदवी, केंकेंकें, चानूगमिनी॥ जंजंजं, रुयगदवी, जंजंजं
 कात्रिणीमग। जंजंजं, समेश्वरीदवी, कांजोवर्धनकेश्वरी॥ सर्वकर्मयसकासा, निगिकर्मेश्वरी। ज
 गत्माताङ्गगद्याताङ्गगग४सिद्धिदायिणी॥ सोम्यासोम्यगत्रादवी, यददहानकवैष्टिगा। हानूकाद्विगीकाश्व
 द्यकाद्यानिनिर्मला॥ कन्दर्यकाटिवाक्य, लीलयावद्वैष्टिगा। उगीयवीजमध्वस्त, वाजस्ररुलदायिनी॥
 । वाजायसर्गसमनी, सर्वायदवनागिनी॥ सर्वकर्मसमूहग, मूयसर्गयसाम्यगि॥ आद्विसिद्धिदायिनी

सर्वद्वन्द्वनिवात्रिणी॥विद्युत्पूजनिहादवीकाटिब्रह्माधुरदिनी॥अनकयागमूडासाअनकेश्वर्यायायिनी॥
 अगाथागिनीयागयानिमूडास्त्रपूयिनी॥महाकालासुमारुंगासुवासुवरुयकन॥वज्रनाथश्वरीदवी
 दिव्यायाकिनमाशुग॥निवाकागनिवाहासुनिनीगनित्रविग्रह॥मन्दिनीयन्दिनीगन्दीसर्वरुगस्यकानि
 नी॥लुक्कगकि॥हानगकि॥क्रियागकि॥यन्त्रेश्वरी॥त्वमवविश्वजननी॥त्वमवविश्वयायिनी॥त्वमवसर्वद
 वानि॥त्वमवगकि॥पूयिनी॥त्वमवसर्वकर्माणा॥मूक्तिपू३॥निवात्रिणी॥गणेश्वर्युमध्वस्त्रा॥महामाहस्त्र
 यिनी॥वज्रयगिकवाधवा॥महाराष्ट्रविलासिनी॥सर्वकर्मलयाकस्त्रा॥सर्वसिद्धिरुल्लसदा॥दिव्यवक्त्रा
 लाधवा॥अवादादिश्वरागिनी॥गकि॥वक्त्रास्त्रिगाथाया॥यन्त्रार्द्रसमलक्षणा॥मूलवीडमहागका॥वीडवीडस्त्र

२१

पूयिनी॥गहिनाजिगवन्धुका॥ब्रह्माधुरपूयिनी॥यासाविहानरुगा॥स्त्रिगिलयजननी॥नका॥सिन्धवर्धुका
 लागिर्था॥सुसंस्कृ॥स्त्रगवयत्रिष्टनावालपूयायवासा॥सावूरुवालमूर्ति॥मुगगगनिधवा॥आनित्रका॥ब्रह्माजिः
 का॥गिकोमात्रिपूयिरुयविगिनिहर्नयायुवी॥वृथसन्ना॥॥निधीयत्रिकायामहामायास्त्रायसमाय॥॥
॥महानवमीरुनरुनवयूजास॥डंनमाहर्नरुनवाय॥नमाशुहर्नवूजाय॥कल्यवानीश्वराय॥
रुनवाय॥सुहीमाय॥वक्त्रावर्क्येनमाशुग॥॥॥कपिवक्त्रमहागजावन्धुका॥ब्रह्माधुरनिहा॥कालावृथमहागजा॥विन
 यायनमाशुग॥॥॥॥काप्रस्यमहादीक्षा॥यायिनी॥पिद॥गत्रि॥दी॥का॥न॥मा॥हर्न॥रु॥हर्न॥न॥मा॥शुग॥॥॥॥
 कू॥कार्ग॥ग॥जि॥र्ग॥नार्द॥रु॥य॥स्या॥पि॥रु॥य॥क॥र्ग॥य॥ना॥र्वा॥न॥व॥मा॥ग॥न॥रु॥स॥या॥र्क॥न॥मा॥शुग॥॥॥॥॥॥रु॥कार्ग॥रु॥द॥का॥सीः
 ४ विदव३॥डु॥का॥ना॥व॥क्रा॥नी॥म॥ध्व॥यी॥या॥म॥र्क॥वा॥स्या॥मा॥न॥का॥व॥न्धु॥क॥का॥का॥ग॥म॥हा॥का॥नी॥मा॥का॥॥॥या॥ध॥वा॥डु॥क॥ली॥या॥सा॥न॥का॥नि॥व॥द॥स्य॥वा॥न॥म॥रु॥द॥व॥द

वगा॥त्वमसिचयमममम

व. सर्वो निद्राय कायर्क। मन्त्रवाजावर्न। प्रष्टा रुतमर्द नमास्तु न॥ १॥ दालक सा दालस प्र दालक दालक नू नू
हा। मुख दाल वरु दाला काला मिश्र नमास्तु न॥ २॥ नका मन्त्र धर्न येव नका मन्त्र नय न। दाल न दाल दीक ३
३ विद्य नू यर्न नमास्तु न॥ ३॥ दालि लना व सि रु ३३ (धन वरु मदी पिर्न। दूँ दूँ दूँ रुट्ट दूँ मदी ३३ रुयान क
नमास्तु न॥ ४॥ य धि मगा द पि न ३३ व दार्ड म हा वली। दूँ दूँ जाँ जाँ दूँ रुट्ट रु गान क नमास्तु क॥ ५॥ डरु वं गू २२
कल मूर्ख रुक्म नो द म हा वली। दूँ दूँ दूँ दूँ रुट्ट वला रु ३३ न मास्तु न॥ ६॥ दाल वाग विना र्म व या ना व सि द्वि द
यर्क। स वं मू य य वार्न व व दार्ड दार्न नमास्तु न॥ ७॥ डरु खलान न र्म र्द जाँ म ना व रु व दार्क। दूँ दूँ दूँ
रुट्ट मन्त्र यू क दान वार्न नमास्तु न॥ ८॥ क पि दी य ३३ व काना ना व र्म हि य ना र्क क। रु खल व र्म र्द

वः रुगवकीनमाश्रुग ॥ ३ ॥ दगारिमुकनेर्युके नकवावलिगीश्रुय। अयधवामदकवधविल्वेचनमाश्रुग
॥ ४ ॥ खमपिगूलखदाम। यागाकृगगयवग॥ इमाकमूगमूगली। मूहिरुहिनमाश्रुग ॥ ५ ॥ इकाकवालव
दना। सिनामालाविरुधिगा। यथारुववहमाद। रुयानकनमाश्रुग ॥ ६ ॥ कालमानमहागजा। गजमध
ममधगा। यनासनायविष्टेय। यथालीधेनमाश्रुग ॥ ७ ॥ विद्युत्यंजनिरुदरु। खदार्कं वसनिरु ॥ सु
र्यकाटिप्रगिकार्ग। दुरुच्येनमाश्रुग ॥ ८ ॥ दुर्गसनावत्रकाय। ययसनाधरुं कर्क। गकसीलावनेवेव स
नारुंजनमाश्रुग ॥ ९ ॥ यथादुर्गास्तिगीधर्त। साधकस्यवि। गखग॥ रुं। गमरुगवतिदुर्गनेर्ये। दुर्गावर्द्धन
माश्रुग ॥ १० ॥ यथवकस्यमवानी। वरुं। चासवि। गमग॥ ननवाककालदुर्ग। विवाधत्वेनमाश्रुग ॥ ११ ॥ अ

रुद्रमहाध्वानं गुरुगविविधमूय। स्मरन्मज्जयमाध्यागि जयतुर्धनमाश्रुग ॥ २२ ॥ जनमालाधिगा निर्यः
 सर्ववदायवावक। मयमसि सवदिद्यै युकनीयं नमाश्रुग ॥ २३ ॥ वायूयूयायवीवायै सगर्वधयवन्ध
 नी। वंकायमथनैदवं वामगहनमाश्रुग ॥ २४ ॥ किस्कि। धयमहावीन महावलपनाकर्म। विलासे युकनीय
 वं नूदात्मं जनमाश्रुग ॥ २५ ॥ एककाले द्विकारं वा। यिकालेय ४ यो। धत्तन ४। अरिस्तुलमाध्यागि वीका सिद्धि
 नमाश्रुग ॥ २६ ॥ नदूरिर्दूरुवलय नवमात्रीयवर्क न। नवीनामिरुयंगय सर्ववर्क नमाश्रुग ॥ २७ ॥ विषा
 रुद्रमहाध्वानं उमायस्मान्म सनं। यनवकयमथनैयायूधकिनमाश्रुग ॥ २८ ॥ सर्वगतिकर्तृ निर्य
 सर्ववदायवावक। सर्वसिद्धियदागानं ००० सिद्धिं नमाश्रुग ॥ २९ ॥ रुद्रवैरुद्रनूनादाय गयूसीहानः